मेि

धाना॰

सिद्धी मदाग्राया म पि स्वियां। सम्बोधोबोधनेक्षेपे समाधिकी समर्थने ॥ ३ ५॥ ध्याननीवाकिनयमेका व्यस्यचगुगान्तरे।॥ धचतः॥ अवरो ध स्तिरोधानेरा जदारेषुनद्ग हो।। ३ए॥ अवष्ट भाविद् रेस्यादाक्रानोचावि सिवते। अनुबन्धस्यबन्धस्याद्देषान्पादेविन स्वरे॥ ४०॥ मुख्यानुया यिबालेचप्रहातस्यानिवर्तने। अनुबन्धीनिस्क्रायांनुष्ठायामिपयाषि ति॥ ४९॥ अनिरुद्ध उषानाथेपुंसिचानच ने ऽन्यवत्। आशाबन्धस मा म्बासेपंसिमकेट जालके॥ ४२॥ इष्ट्रगन्धः छगन्धे।स्यात् विष्वती व नुवानु के । इ कु गन्ध किला का क्षेत्रे का कृयां का श्चिम ।। ४३ ॥ उप सिधिमि तै।प्राप्ताविपिज्ञानेचयोषिति। उग्रगन्धाऽजमाद्।यांवचायं। चिक् क्रिकाषधा ॥ ४४॥ कालस्क न्ध स्तमालेस्या निच्दकेजी वकडुमे। ती क्शगन्धाववाराजिकवाःशोभाञ्जनेपुमान् ॥ ४५॥ नृगागोधाचिचका लेहा कला से पिया षिति । परिव्याधन्त पंसिस्या देत सेचडु मात्यले॥ ४६॥ ब हानसुरिधिक्षितिर्देशेबाह्म ग्रस्मना। महीषधनुष्र्वं ह्यांस्यादि षायालम्भनेपिच॥४७॥ समुन्नद्धः समुद्भनेपशिडनं मन्यगर्विते।॥ ध षञ्च ॥ याजनगन्धा कस्द्र य्यासिनायां व्यासमानि ॥ ४५॥

हर ने की वाला मिला कि हिंदा कर कि मान कर कि मान कर कि कि मान कि म

\*\*\*\*\*\*\*\*\* ॥ नैनं ॥ नःप्रमान्स्गतेनंधिद्वर गडेपस्ततेऽपिच।॥ नदिः॥ अग्नि नाः